International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-07-2021, Accepted: 15-08-2021, Published: 01-09-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 1-3

जनवादी एवं प्रतिबद्धता के रचनाकार संजीवः नारी पात्रों के विशेष संदर्भ में

डॉ. वर्षा खरे[1], राजेश कुमार वर्मा[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शासकीय कन्या महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
समाज में जो परिवर्तन होते हैं, उन पर साहित्यकारों की पैनी नजर होती है। जिसके कारण वह अपनी कलम को एक नयी भावभुमि पर अवतरित कर पाने में सफलता हासिल कर पाते हैं। संजीव ने जो विडम्बना अपने आस–पास में घटती हुई देखी जिसे स्वयं भोगा उसका आकलन अपनी कथा में किया है। इसी कारण उनके साहित्य में संस्कृति, यथार्थ, आदिवासी जीवन, विज्ञान, की जो परिणति मिलती है उसका कारण मात्र यही है कि वह उन सभी परिस्थितियों को देख और समझ चुके हैं। इस आलेख में मैंने संजीव के कथा साहित्य में नारी जीवन की विडम्बनाओं का गहराई से अवलोकन करने के पश्चात् ही उसको अपने आलेख में समाहित किया है। संजीव जैसे कलाकार विरले ही साहित्य में अपनी अभिव्यक्ति को खुलकर कहने में सक्षम होते हैं। नारी जीवन की विपदा को अपनी कहानी और उपन्यासों दोनों में उन्होंने प्रदर्शित किया है। जिसका संक्षिप्त विवरण मैंने अपने आलेख में किया है।

मूलशब्दः आदिवासी, शोषण, विकृतियों, विद्रूपताओं, विसंगतियों कुंठाओं, नक्सलवाद, छटपटाहट

प्रस्तावना

संजीव ने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में वर्ग संघर्ष की छटपटाहट, गरीब वर्ग की वेदना–व्यथा, आदिवासी सभ्यता का चित्रण, समाज की कटु व शर्मनाक सच्चाई को बिना किसी भय व पक्षपात के व्यक्त किया है। नव्य कथावस्तु, अभिनव, चरित्र–चित्रण पात्रानुकूल भाषा, परकाया प्रवेष आदि मिलकर उपन्यासों को नया आकार देते हैं। उनके उपन्यासों में भावुकता भी दिखाई देती है। संजीव तत्कालीन व्यावसायिक व साहित्यिक लेखन से असंतुष्ट रहे हैं, इसलिए उन्होंने अपने साहित्य को लीक से हटकर लिखा है। लेखक ने समाज में हाशिए पर छूटे हुए लोगों की यथार्थ परिस्थितियों व उनकी समस्याओं को उभारते हुए अपने साहित्य में जगह दी है। अतः लीक से हटकर न सिर्फ उनके अपने लेखन का मन्तव्य था, बल्कि वे लीक से हटकर लिखने वाले उभरते लेखकों को लेखन में मदद भी करते हैं। इस प्रकार संजीव सृजन के परंपरागत सिद्धातों को छोड़कर सृजन की नई राहें खोजने में सफल रहे है।

संजीव के उपन्यास व्याप्त और विविध हैं। वे अपने पात्रों की वेश–भूषा, रहन–सहन, बोली–बाणी और मनोविज्ञान से लेकर सामाजिक स्थिति सभी कुछ संपूर्णता से प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने वर्तमान समाज की विकृतियों, विद्रूपताओं, विसंगतियों, विडम्बनाओं, कुंठाओं, नक्सलवाद की स्थितियों को पाठकों के सामने विस्तार से रखा हैं। वास्तव में संजीव ने समाज के मूल्य, आदर्श औश्र अप्रत्यक्ष पहलुओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। संजीव का साहित्य विभिन्न आयामों जैसे शोषण, मानसिक तनाव, वर्ग–संघर्ष, विद्रोह, अस्तित्व की खोज आदि कसौटियों पर खरा उतरता है।

संजीव के उपन्यास साहित्य में संघर्ष करने वाले अकाट्य साहसी नारी पात्र मिलते है। किसन गढ़ के अहेरी में चाँचनी संघर्षशील पात्र है तो राधा, सोना, रतिया, शोशित नारी पात्र हैं। 'सर्कस' नायिका प्रधान उपन्यास है। शोषित और उपेक्षित कालाकारों में भी चेतना पाई जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में झरना प्रमुख पात्र है। तो चँदा, रीता, सुनीता, रूपा संधू दी एक तरह उसी के संस्करण हैं। झरना स्वयं को सर्कस में कैद पाती है तो वह उससे मुक्ति चाहती है। अंततः वह सर्कस को छोड़ देती है। तो झरना और संधू दी अपने स्थान पर अपनी हैयिसत से से विरोध जारी रखती हैं। 'सावधान' नीचे आग है' उपन्यास में नारी पात्र–स्वाति, गूंगी, केतकी, स्मिता दी, कालिंदी जैसे पात्रों का जमघट है लेकिन यहाँ भी लेखक प्रभावात्मक रूप से एक भी नारी पात्र खडी नरी कर सके हैं। चार उपन्यास में चेतना का प्रगल्म और संरचनात्मक रूप सामने आता है। उपन्यास नायिका प्रधान है। यहाँ चेतना में विचार और क्रिया का अनूठा संयोजन मिलता है। आदिवासी मैना में अकाट्य साहस गजब की चेतना और क्रातिकारी क्रियाशक्ति मिलती है। वह एक साथ परिवार, बिरादरी, पूजीपति, गुडे और व्यवस्था से दो हाथ करती सीता और बिसराम बहू जनजातीय अभिशप्त नारियों के रूप में चित्रित हुई हैं। 'पाव तले की दूत उपन्यास में शिला केरकेट्टा प्रमुख नारी पात्र के रूप में चित्रित हुई है जो नायक सुदीप्त के प्रति आकर्षित हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि, मैना, झरना, चाँदनी, मलारी आदि महत्वपूर्ण नारी पात्रों ने विवेच्य उपन्यासों में पाठक वर्ग के हदय पर गहरी छाप छोडी परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यासों में विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक तथा मनोवैज्ञानिक आदि विधियों में चरित्र–चित्रण परिलक्षित होता है।

प्राणी मात्र के विकास या सृष्टि की प्रक्रिया को सतत बनाये रखने के विए प्रायः प्रत्येक प्रजाति या नस्ल में नर और मादा का विधान मिलता है। मानव समाज में स्त्री एवं पुरुष के मेल से सृष्टि चक्र निरन्तर परिचालित रहता आया है। शारीरिक दृष्टि से नर अर्थात् स्त्री में फर्क होता है। नारी को प्रकृति ने सृजन की वाहिका बनाया है। इस विशेषता ने उसे पुरूष पर निर्भर भी बनाया। पुरूष को जब इस बात का एहसास हुआ तब से उसने स्वयं को नारी की अपेक्षा स्वतंत्र और ताकतवर समझकर उस पर शासन करना चाहा। यही से शुरू होता है एक पुरूष–प्रधान समाज। पुरूष तांत्रिक सामाजिक व्यवस्था में पिता, पति, पुत्र आदि पुरूष को परिवार में प्रधानता दी जाने लगी और नारी को उसकी अनुगता अथवा दासी बनकर रहना पड़ा विश्व में मातृ सत्तामक परिवारों की अपेक्षा पुरूष प्रधान पितृसत्तामक परिवारों की संख्या बहुत अधिक है। प्रत्येक समाज का एक निजी मानदण्ड होता है जिसका उल्लंघन करना अपराध माना जाता है। समाजिक परिवेश व्यक्ति के मनोविज्ञान को अधिकारिक

प्रभावित करता है। आदिमयुग से ही स्त्री पुरूश जिस प्रकार के परिवेश एवं परिस्थितियों में जी रहे है। उसके अनुकूल ही उसका मनोविक्षान भी बना। परन्तु स्त्री पुरूष दोनों के मनाविज्ञान में काफी अन्तर है। क्योंकि दोनों के महत्व का स्तर समाज में भिन्न–भिन्न है। नारी को अक्सर पुरूष के अहं के आगे झुकना पड़ता है, अतः उसमें सहानुभूति, सहनशीलता, धैर्य, शांत, चिंत्तता परिश्रम की प्रवृति आदि गुणों का विकास होने लगा। वह अपने संवेगों पर यथ साध्य नियंत्रण रखती है। इसीलिए मानसिक स्थायित्व, आत्मबल आदि गुण पुरूष की तुलना में स्त्री को अधिक है। इसीलिए गाँधी जी कहते हैं कि

''नर में यदि नारी का स्वभाव आ जाये तो वह महात्मा बन जाता है, और नारी में यदि न का स्वभाव हो तो वह कुलटा बन जाती है।

प्रभवशाली स्त्री पात्रों में ''अपराध'' कहानी की नायिका संधमित्रा आज की नारी का प्रतिरूप है। परन्तु उसमें आधुनिकता का मुखौटा नहीं है। मेडिकल की मेधावी छात्रा होते हुए भी वह अपने भाई के लिए अपा जीवन अर्पित कर देती है। त्याग, स्वाभिमान और बलिदान की प्रतिरूप सघमित्रा समाज के लिए एक आदर्श हैं ''आप यहाँ'' की आदिवासी महिला हिन्दुआ एक ईमानदार, कर्तव्यपरायण और स्वामीभक्त दासी थी। मिस्टर वर्मा हिन्दुआ से अवैध सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु हिन्दुआ को किसेज वर्मा जलीी करना चाहती है। पिकनिक के बहाने हिन्दुआ को मिसेज वर्मा जलील करना चाहती है। पिकनिक के बहाने हिन्दुओ के गाँव पहुँचकर उसकी खूब खबर लेने की मूछ में रहती है। वब हिन्दुआ सारे गाँव को इकट्ठा करती है और उन्हें डराने में सफल हो जाती है। उसहाय, अशिक्षित और निर्बल होते हुए भी वह वर्मा पति पत्नी को परास्त कर देती हैं समाज में अकेली उसहाय औरत को जब सामूहिक सहायता मिलती है तब वह अन्याययय के खिलाफ आवाज उठाने में समर्थ हो जाती है। हिन्दुआ ''जासी बहू'' के समान मूक बनकर जुल्म सहने के लिए तैयार नहीं होती। यह आज की शोषित नारी का जागृत रूप है। इसी प्रकार शफीक की बीबी । अपनी नाटी गाय को प्राप्त करने में सफल हो जाती है। कुछ घटनाए या कुछ परिस्थितियाँ ऐसी आन पड़ती है कि सारा समाज एकाएक जाग्रत होकर विपतियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है। जब समाज में आपसी समझ और एकता हो तो वहाँ असामाजिक तत्व छँट जाते है और एकता के इस आन्दोलन को सक्रिय रूप देने वाला व्यक्ति प्रभावी हो जाता है। सेठ घिनहुदास से निजात पाने का श्रेय यद्यपि सारे गाववाले को है परन्तु विशेष रूप से इस हलचल के पीछे केन्द्रीय पात्र शफीक की बीवी ही तो है अर्थात् समाज ही व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है।

अप्रभावशाली स्त्री पात्रों में ''घर चलो दुलारी बाई'', ''जसी बहू'', ''पून्नी माटी'', ''आप यहाँ'', ''कठपुतली'', ''धनुष टंकार'' आदि में मिलता है। ''घर चालो दुलारी बाई'' पुरूष प्रधान समाज की अमानवीयता को दर्शाती है। पच्चीस बीधे जमीन के लिए पहले दुलारी बाई के पिता को मारा जाता है। फिर पति को, फिर बेटे को और अन्त में कचहरी की खूनी दीवारों ने उसे भी जिन्दा रहते हुए भी मरा घोषित कर दिया। जसी बहू में शांत सहनशील और असहाय नारी रूप का दर्शन होता है। जसी बहूत पति की प्रतीक्षा में वर्षों बिता देती है परन्तु पति आगमन के समय तक वह सितई पंडित के कारण गर्भणी हो जाती है। पति उसे घर से निकाल देता है और दुबारा शादी करता है। ऐसी हालत में वह कमजोर न होकर प्रभावशाली कैसे बन सकती है? जव स्त्री ही स्त्री की शत्रु बने ही दूसरी नारी की निन्दा करती है तथा द्वेषात्मक रवैया अपनाती है। ''आप यहाँ'' कहानी की मिसेज वर्मा अपने पति को हिंदुआ के साथ रंगे हाथों पकड़ लेती है परन्तु वह पति से अधिक हिंदुआ पर रूष्ट हो जाती है। उससे उन्य दलाल भी फायदा उठाते है किन्तु स्वयं उसे फूटी कौड़ी तक नहीं मिल पाती।

उच्च वर्ग, जमींदार, सेठ, साहूकार ग्रामीण निम्न वर्ग की औरतों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने या उनसे बलात्कार करने को अपना अधिकार समझते हैं। किसनगढ के अहेरी उपन्यास में जमींदार ज्योतिष बाबा अपनी सांमती सोच के कारण गाँव की गरीब औरतों को अपनी सम्पति समझते हैं। वह औरतों को कभी झाड़–फूंक के नाम पर तो कभी डरा–धमकाकर तो कभी अबरदस्ती अपनी वासना का शिकार बनाता है। वह उपने खेतों में काम करने वाली सोना ने पशुशाला में बलात्कार करता है। बलात्कार की इस घटना को उपन्यासकार ने इस प्रकार वर्णित किया है, आहट भांप नहीं पाई सोना और जनेऊ कान पर चढ़ाए ही पीछे से उसे गंझोटे मे पकड़कर ले गए बाबा! सोना ने चीखना चाहा मगर लोक–लाभ के भय से चीख न पाई और बाबा ने उसे ब्राम्हाणी बना ही दिया। इस प्रकार उच्च जाति के लोग गरीब औरतों के साथ बलात्कार करते हैं, उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर शारीरिक सम्बन्ध बनाते हैं।

गरीब औरतों का बलात्कार कराने के मामले में तथाकथित उच्चवर्ग की औरतें भी पीछे नहीं हैं वे छोटी जाति की औरतों को नीचा दिखाने और उनके स्वाभिमान को तोड़ने के लिए उनके साथ ऐसा करती हैं। वे खुद तो बलात्कार कर नहीं सकती इसलिए अपने पुरूष रिश्तेदारों से उनके साथ बलात्कार करवा देती हैं। 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में सुन्नर पांडे की पत्नी उनके घर में काम करने वाली गरीब औरत से अपने पति की सहायता से अपने भाई से बलात्कार करवा देती है। उपन्यासकार के शब्दों में, किवाड़ की झिरीं से काली ने अन्दर का जो नजारा देखा तो रोगटे खड़े हो गए। पांड़े और पंडाइन ने उस औरत को हाथों से पकड़ रखा था और पांड़े का साला उसे दबोचे हुए था। इस प्रकार उच्च जाति की औरतें भी गाँव की गरीव औरतों की इंज्जत से खिलवाड़ कराती हैं।

इसी सर्कस उपन्यास का मालिक उपनी महिला कलाकार चन्द्रा से शारीरिक सम्बन्ध बनाता है। जब उसका दिल उस लड़की से भर जाता है तो वह उसे अपने दूसरे साथी को सौंप देता है। तय चन्द्रा अपनी सहेली गीता को कहती है– बहन। ..... तुझे क्या बताऊँ, रात–दिन मैं किस असुरक्षा के बीच घिरी पाती हूँ अपने को। अनाथाश्रम से खरीदकर ले आए हैं नियोगी साहब। अब उन्हें रीता भा गई है तो रघुनाथ ने लपक लिया है मुझे... बहुत पहले ही बड़ी कर दी गई हूँ।

सर्कस का मालिक नियोगी अपनी महिला कलाकारों के साथ यौन सम्बन्ध बनाता रहता है। उसका जब एक से दिल भर जाता है तो नई महिला कलाकार के साथ डरा–धमकाकर या फिर लालच देकर शारीरिक सम्बन्ध बनाना शुरू कर देता है। महिला कलाकार सर्कस से निकालने के डर से उसका विरोध नहीं कर पातीं। ऐसी ही एक महिला कलाकार रीता है, शुरू में नियोगी उसे काफी पैसे देकर और सर्कस में अहमियत देकर शारीरिक सम्बन्ध बनाता रहता है। जब उसका उससे दिल भर जाता है तो वह रीता की षादी अपनी सर्कस में काम करने वाले सरजू नाम के एक बौने कलाकार से करा देता है ताकि जव भी दिल चाहा वे अपनी वासना का खेल खेल सके । क्योंकि सरजू अपने बौने कद और उसका नौकर होने की वजह से उसका विरोध नहीं कर सकता। उपन्यासकार के शब्दों में नियोगी ने उसके चेहरे पर घिर आई लटों को हटा कर चेहरे को हथेलियों में लिया प्यार में इतनी सेक्रिफाइस तो करनी ही पड़ेगी मेरी जान! और उसने उसके होठों को चूल लिया।..... पलके डबडबा आई रीता की। कन्धे पर गाल धरकी सिसकने लगी। मैं जानती थी, ऐसा ही होगा। इस गलत सम्बन्धों की यही नियत होगी।

इन कथनों से सिद्ध होता है कि गरीब और मजदूर औरत कहीं भी सुरक्षित नहीं। उनके साथ उनके साथी और नियोक्ता तक अपनी वासना की आग को बुझाते हैं। कामिनी अपनी नियति के

बारे में सोचती है। उपन्यासकार के शब्दों में, उसकी नजरें अपने ही जैसे नियति से बंधे उन तमाम यायावरों पर गई। बार–बार के उखाड़े गए लोग, बार–बार अपना खमा–खूंटा गाड़ते बनजारें, दूसाों के मनोंरंजन के लिए रंग–रोगन लगाकर मेला सजाते मज़मेबाज। गाँव–गाँव, देश–देश, अपने टट्टुओं की पीठ र खाट, बिस्तर, पोटलियाँ, हांड़–बासन, बच्चे–कच्चे, लिए खानावदोश, मर्दो की तरह साड़ी का कछन्ना कसे नियति के थपेड़े खातीं औरतें। आज तक उनकी 'अगड़–बगड़' बोली भले ही नहीं समझ में आई हो लेकिन उनका दर्द उससे अंजाना कैसे रह सकता है। वह भी तो वही है। राजाओं, सामन्तों, सेठों, ठेकेदारों की वासना को तृप्त करती वख्शीश पाकर कोर्निश करती हुई नटी। सभ्यता के आदिम युग से एक जैसी यायावरी में भटकते गिरोह, उसी में जनमते बच्चे, उसी में जवान होकर परवान चढ़ते लोग। बूढों और अपाहिजों को छोड़कर चुपचा आगे बढाते हुए काफिले। अभी बदन में कमनीयता है तो हर अपाहिजों को छोड़कर चुपचाप आगे बढ़ते हुए काफिले। अभी बदन में कमनीयता है तो हर गिरोह से प्रस्ताव आ रहे हैं, मुखिया को चक्रान्त में निहतकर उसके दल की सुन्दरियों, पशुओं सेवको की लूट के लिए आपस में रची जाने वाली बन्दर–बाँट।

प्राचीन काल से नारी शोषित रही है। आजादी के बाद वह अपने अधिकारों से वंचित है। पुरूष प्रधान संस्कृति होने के कारण आज भी नारी की ओर सम्मान से नहल देखा जाता संजीव सामंतवाद, पूँजीवाद और माम्राज्यवाद के विरूद्ध जनवाद की विचारधारा को सशक्त बनाना चाहते हैं। स्त्री मुक्ति के लिए भी इसे वे जरूरी समझते हैं उनके कथनानुसार, ''सामंतवाद पूँजीवाद और साम्राज्यवाद ने दोयम और तेयम दर्जे की वारियों में इजाफा किया है दोयम वे जो पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता से संचलित नियंति से समझौता करनेवाली या समोहित नारी है। तेयम वे जो अपनी स्वतंत्र इयत्ता के लिए छटपटाती है, मगर पथ नहीं ढूँढ पाती। इसके विपरीत जनवाद ने ऐसी नारियों को पैदा किया है, जो पतनशील स्थितियों से जूझते हुए शौर्य और संघर्शमुक्ति और आस्था के नये क्षितिज खोलती है।

संजीव की वैचारिक दृष्टि स्त्री के चटखारेदार चित्रण और अनावश्यक यौन–संबंधो के प्रदर्शन को अनुचित मानती है। उन्होंने उपने एक खत में 'हस–पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव पर भ उगली उठाई थी कि ''हंस को जोडने का सवाल आएगा तो प्रेमचंद्र से जोड़ेंगे और अलिंगन के पिसाव में स्तनों के दरकने की दृष्टि लेंगे परवर्ती किसी हंस से।'' इस वैचारिक नजरिये को शिवमूर्ति की कहानी तिरिया चरित्तर पर की गई उनकी टिप्पणी से भी समझा जा सकता है उन्होंने लिखा था, ''यौन प्रसंगो को लेकर हमारा समाज जहाँ स्वतः ही कुंठित रहता है, ऐसे में उनकी प्रभावान्वित लोक पक्ष में जाएगी। या प्रतिकूल इस पर ठंडे दिमाग से सोचने की जरूरत थी ..... यौन प्रसंगों के सायास चित्रण से बचा जाता तो कहानी का कुछ नही बिगडता ।

संदर्भ सूची

1. सावधान नीचे आग है !– संजीव, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2–38,अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली प्रथम संस्करण, 1986
2. किसनगढ़ के अहेरी– संजीव मिनाक्षी मन्दिर दिल्ली प्रकाशन संस्करण 1981
3. संर्कस – उपन्यस से, संजीव – अक्षर प्रकाशन दिल्ली, प्रकाशन संस्करण, 1984
4. हिन्दी कहानियाँ का शिल्प विधि का विकास, लक्ष्मी बार्ष्णेय साहित्य भवन प्रकाशन संस्करण 1996
5. जंगल जहाँ शुरू होता है– संजीव, राधाकृष्णन प्रकाशन प्रथम संस्करण 1995
6. अनुसंधान – –त्रैमासिक पत्रिका– अक्टूबर – दिसम्बर 2011, 285 ओहद रेजीडेसी दादरपुर रोड, दिल्ली अलीगढ़